رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

2.कुफ़्फ़ार (आख़िरत में मोमिनों पर अल्लाह की रह़मत के मनाज़िर देख कर) बार बार आरज़ू करेंगे कि काश ! वोह मुसलमान होते।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

3. आप (ग़मगीन न हों) उन्हें छोड़ दीजिऐ वोह खाते (पीते) रहें और ऐश करते रहें और (उनकी) झूटी उम्मीदें उन्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखें फिर वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَ مَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَ لَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾

4. और हमने कोई भी बस्ती हलाक नहीं की मगर येह कि उसके लिए एक मा'लूम नविश्तए (क़ानून) था (जिसकी उन्होंने ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और अपने अंजाम को जा पहुंचे)।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

5. कोई भी क़ौम (क़ानूने उ़रूजो ज़वालकी) अपनी मुक़र्ररह मुद्दत से न आगे बढ़ सक्ती है और न पीछे हट सक्ती है।

وَ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾

6.और (कुफ़्फ़ार गुस्ताख़ी करते हुए) केहते हैं : ऐ वोह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है बेशक तुम दीवाने हो।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾

7. तुम हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आते अगर तुम सच्चे हो?

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْۤا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾

8. हम फ़रिश्तों को नहीं उतारा करते मगर (फ़ैसलए) ह़क़ के साथ (या'नी जब अ़ज़ाब की घड़ी आ पहुंचे तो उसके निफ़ाज़ के लिए उतारते हैं) और उस वक़्त उन्हें मोह्लत नहीं दी जाती।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾

9.बेशक येह ज़िक्रे अ़ज़ीम (क़ुरआन) हमने ही उतारा है और यक़ीनन हम ही इसकी ह़िफ़ाज़त करेंगे।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾

10. और बेशक हमने आपसे क़ब्ल पहली उम्मतों में भी रसूल भेजे थे।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾

11. और उनके पास कोई रसूल नहीं आता था मगर येह कि वोह उसके साथ मज़ाक़ किया करते थे।

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

12. इसी तरह हम उस (तमस्ख़ुर और इस्तेह्ज़ाअ) को मुजरिमों के दिलों में दाख़िल कर देते हैं।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

13. येह लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे और बेशक पहलों की (येही) रविश गुज़र चुकी है।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

14. और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा (भी) खोल दें (और उनके लिए येह भी मुमकिन बना दें कि) वोह सारा दिन उसमें (से) ऊपर चढ़ते रहें।

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ ع ١٥ ١

15. (तब भी) येह लोग यक़ीनन (येह) कहेंगे कि हमारी आँखें (किसी हीलाओ फ़रेब के ज़रीए) बांध दी गई हैं बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

16. और बेशक हमने आस्मानमें (कहकशाओं की सूरत में सितारों की हिफ़ाज़त के लिए) क़िल्ए बनाए और हमने उस (ख़लाई काइनात) को देखनेवालों के लिए आरास्ता कर दिया।

وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

17. और हमने उस (आस्मानी काइनात के निज़ाम) को हर मर्दूद शैतान (या'नी हर सरकश क़ुव्वत के शर्र अंगेज़ अ़मल) से महफ़ूज कर दिया।

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

18. मगर जो कोई भी चोरी छुपे सुनने के लिए आ घुसा तो उसके पीछे एक (जलता) चमकता शिहाब हो जाता है।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ

19. और ज़मीन को हमने (गोलाई के बावजूद) फैला दिया और हमने उसमें (मुख़्तलिफ़ माद्दों को बाहम मिला कर) मज़बूत पहाड़ बना दिए और हमने उसमें हर

شَیۡءٍ مَّوۡزُوۡنٍ ﴿۱۹﴾

जिन्सको (मतलूबा) तवाज़ुन के मुताबिक नश्वोनुमा दी।

وَجَعَلۡنَا لَکُمۡ فِیۡهَا مَعَایِشَ وَ مَنۡ لَّسۡتُمۡ لَهٗ بِرٰزِقِیۡنَ ﴿۲۰﴾

20. और हमने उसमें तुम्हारे लिए अस्बाबे मईशत पैदा किए और उन (इन्सानों, जानवरों और परिन्दों) के लिए भी जिन्हें तुम रिज़्क़ मुहय्या नहीं करते।

وَ اِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۲۱﴾

21. और (काइनात) की कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है मगर येह कि हमारे पास उसके ख़ज़ाने हैं और हम उसे सिर्फ़ मुअ़य्यन मिक़्दार के मुताबिक़ ही उतारते रेहते हैं।

وَ اَرۡسَلۡنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَیۡنٰکُمُوۡهُ ۚ وَ مَاۤ اَنۡتُمۡ لَهٗ بِخٰزِنِیۡنَ ﴿۲۲﴾

22. और हम हवाओं को बादलों का बोझ उठाए हुए भेजते हैं फिर हम आस्मान की जानिबसे पानी उतारते हैं फिर हम उसे तुम ही को पिलाते हैं और तुम उसके ख़ज़ाने रखनेवाले नहीं हो।

وَ اِنَّا لَنَحۡنُ نُحۡیٖ وَ نُمِیۡتُ وَ نَحۡنُ الۡوٰرِثُوۡنَ ﴿۲۳﴾

23. और बेशक हम ही जिलाते हैं और मारते हैं और हम ही (सबके) वारिस (व मालिक) हैं।

وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِیۡنَ مِنۡکُمۡ وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَاۡخِرِیۡنَ ﴿۲۴﴾

24. और बेशक हम उनको भी जानते हैं जो तुमसे पहले गुज़र चुके और बेशक हम बाद में आनेवालों को भी जानते हैं।

وَ اِنَّ رَبَّکَ هُوَ یَحۡشُرُهُمۡ ؕ اِنَّهٗ حَکِیۡمٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۵﴾ ع ۲ ۱۰ ۲

25. और बेशक आपका रब ही तो उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा' फ़रमाएगा । बेशक वोह बड़ी हिक्मतवाला खूब जाननेवाला है।

وَ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۲۶﴾

26.और बेशक हमने इन्सानकी (कीमियाई) तख़्लीक़ ऐसे खुश्क बजनेवाले गारे से की जो (पहले) सिन रसीदह (और धूप और दीगर तबीइ़य्याती और कीमियाई असरात के बाइ़स तग़य्युर पज़ीर हो कर) सियाह बूदार हो चुका था।

وَ الۡجَآنَّ خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ مِنۡ نَّارِ

27. और उससे पेहले हमने जिन्नों को शदीद जला

السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

देनेवाली आगसे पैदा किया जिसमें धुवां नहीं था।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

28. और (वोह वाक़िआ़ याद कीजिए) जब आपके रब ने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि मैं सिन रसीदह (और) सियाह बूदार, बजनेवाले गारे से एक बशरी पैकर पैदा करने वाला हूं।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. फिर जब मैं उसकी (ज़ाहिरी) तश्कीलको कामिल तौर पर दुरुस्त हालत में ला चुकूं और उस पैकरे (बशरी के बातिन) में अपनी (नूरानी) रूह़ फूंक दूं तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ۙ

30. पस (उस पैकरे बशरी के अंदर नूरे रब्बानी का चिराग़ जलते ही) सारे के सारे फ़रिश्तोंने सज्दह किया।

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾

31. सिवाए इब्लीसके, उसने सज्दह करने वालों के साथ होने से इन्कार कर दिया।

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्लीस ! तुझे क्या हो गया है कि तू सज्दह करनेवालों के साथ न हुआ।

قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾

33. (इब्लीस ने) कहा : मैं हरगिज़ ऐसा नहीं (हो सक्ता) कि बशर को सज्दह करूं जिसे तूने सिन रसीदह (और) सियाह बूदार, बजनेवाले गारे से तख़्लीक़ किया है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٣٤﴾ۙ

34. (अल्लाहने) फ़रमाया : तू यहां से निकल जा पस बेशक तू मरदूद (रान्दए दरगाह) है।

وَّ اِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक तुझ पर रोज़े जज़ा तक ला'नत (पड़ती) रहेगी।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ

36. उसने कहा : ऐ परवरदिगार ! पस तू मुझे उस दिन

يُبۡعَثُوۡنَ ﴿٣٦﴾

तक मोहलत दे दे (जिस दिन) लोग (दोबारह) उठाए जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الۡمُنۡظَرِيۡنَۙ ﴿٣٧﴾

37. अल्लाहने फ़रमाया : सो बेशक तू मोह्लत याफ़्ता लोगों में से है।

اِلٰى يَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ ﴿٣٨﴾

38. वक़्ते मुक़र्ररह के दिन (क़ियामत) तक।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغۡوَيۡتَنِىۡ لَاُزَيِّنَنَّ
لَهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَلَاُغۡوِيَنَّهُمۡ
اَجۡمَعِيۡنَۙ ﴿٣٩﴾

39. इब्लीसने कहा : ऐ परवरदिगार ! इस सबब से जो तूने मुझे गुमराह किया मैं (भी) यक़ीनन उनके लिए ज़मीन में (गुनाहों और ना फ़रमानियों को) खूब आरास्ता-व-खुशनुमा बना दूंगा और उन सबको ज़रूर गुमराह कर के रहूंगा।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٤٠﴾

40. सिवाए तेरे उन बरगुज़ीदह बंदों के जो (मेरे और नफ़्स के फ़रेबोंसे) खुलासी पा चुके हैं।

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسۡتَقِيۡمٌ ﴿٤١﴾

41. अल्लाहने इर्शाद फ़रमाया : येह (इख़्लास ही) रास्ता है जो सीधा मेरे दर पर आता है।

اِنَّ عِبَادِىۡ لَـيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ
سُلۡطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الۡغٰوِيۡنَ ﴿٤٢﴾

42. बेशक मेरे (इख़्लास याफ़्ता) बंदों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा सिवाए उन भटके हुओं के जिन्होंने तेरी राह इख़्तियार की।

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوۡعِدُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٤٣﴾

43. और बेशक उन सब के लिए वा'दे की जगह जहन्नम है ।

لَهَا سَبۡعَةُ اَبۡوَابٍؕ لِكُلِّ بَابٍ
مِّنۡهُمۡ جُزۡءٌ مَّقۡسُوۡمٌ ﴿٤٤﴾ ع ١٩ ٣

44. जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उनमें से अलग हिस्सा मख़्सूस किया गया है।

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍؕ ﴿٤٥﴾

45. बेशक मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में रहेंगे।

اُدۡخُلُوۡهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيۡنَ ﴿٤٦﴾

46.(उनसे कहा जाएगा) इनमें सलामती के साथ बे ख़ौफ़ हो कर दाख़िल हो जाओ।

وَنَزَعۡنَا مَا فِىۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنۡ غِلٍّ

47. और हम वोह सारी कुदूरत बाहर खींच लेंगे जो

اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾

(दुनिया में) उनके सीनों में (मुग़ाल्ते के बाइस एक दूसरे से)थी, वोह (जन्नत में) भाई भाई बन कर आमने सामने बैठे होंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّ مَا هُمْ
مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. उन्हें वहां कोई तक्लीफ़ न पहुंचेगी और न ही वोह वहां से निकाले जाएंगे।

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾

49. (ऐ हबीब!) आप मेरे बंदों को बता दीजिए कि मैं ही बेशक बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान हूं।

وَ اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

50. और (इस बातसे भी आगाह कर दीजिए) के मेरा ही अज़ाब बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।

وَ نَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾ وقف لازم

51. और उन्हें इब्राहीम (عليه السلام) के मेहमानों की ख़बर (भी) सुनाइए।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ
قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. जब वोह इब्राहीम (عليه السلام) के पास आए तो उन्होंने (आपको) सलाम कहा। इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा कि हम आपसे कुछ डर मेहसूस कर रहे हैं।

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ
عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾

53. (मेहमान फ़रिश्तों ने) कहा : आप ख़ाइफ़ न हों हम आपको एक दानिश्मंद लड़के (की पैदाइश की) ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ
الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : तुम मुझे इस हाल में ख़ुशख़बरी सुना रहे हो जबकि मुझे बुढ़ापा लाहक़ हो चुका है सो अब तुम किस चीज़ की ख़ुशख़बरी सुनाते हो।

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾

55. उन्होंने कहा : हम आपको सच्ची बशारत दे रहे हैं सो आप ना उम्मीद न हों।

قَالَ وَ مَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ
رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾

56. इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : अपने रबकी रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन मायूस हो सक्ता है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. इब्राहीम (عليه السلام) ने दरयाफ़्त किया : ऐ (अल्लाहके) भेजे हुऐ फ़रिश्तो ! (इस बिशारतके अ़लावा) और तुम्हारा क्या काम है ? (जिसके लिए आए हो)।

قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ
مُّجْرِمِيْنَ ۙ﴿۵۸﴾

58. उन्होंने कहा : हम एक मुजरिम क़ौमकी तरफ़ भेजे गए हैं।

اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۵۹﴾

59. सिवाए लूत (عليه السلام) के घराने के, बेशक हम उन सबको ज़रूर बचा लेंगे।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿۶۰﴾ ع

60. बजुज़ उनकी बीवी के, हम (येह) तय कर चुके हैं कि वोह ज़रूर (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जानेवालों में से है।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ۙ﴿۶۱﴾

61. फिर जब लूत (عليه السلام) के ख़ानदान के पास वोह फ़िरस्तादह (फ़रिश्ते) आए।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾

62. लूत (عليه السلام)ने कहा : बेशक तुम अजनबी लोग (मा' लूम होते) हो।

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ﴿۶۳﴾

63. उन्होंने कहा : (ऐसा नहीं) बल्कि हम आपके पास वोह (अ़ज़ाब) ले कर आए हैं जिसमें येह लोग शक करते रहे हैं।

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۶۴﴾

64. और हम आप के पास हक़ (का फ़ैसला) ले कर आए हैं और हम यक़ीनन सच्चे हैं।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَ
اتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۵﴾

65. पस आप अपने अहले ख़ानाको रातके किसी हिस्से में ले कर निकल जाइए और आप ख़ुद उनके पीछे पीछे चलिए और आपमें से कोई मुड़ कर (भी) पीछे न देखे और आपको जहां जानेका हुक्म दिया गया है (वहां) चले जाइए।

وَقَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ
دَابِرَ هٰۤؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾

66. और हमने लूत (عليه السلام) को उस फैसले से बज़रीए वही आगाह कर दिया कि बेशक उनके सुब्ह़ करते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी।

وَجَآءَ اَهۡلُ الۡمَدِيۡنَةِ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ﴿٦٧﴾

67. और अह्ले शहर (अपनी बद मस्ती में) ख़ुशियां मनाते हुए (लूत عليه السلام के पास) आ पहुंचे।

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيۡفِىۡ فَلَا تَفۡضَحُوۡنِ ۙ﴿٦٨﴾

68. लूत (عليه السلام) ने कहा : बेशक येह लोग मेरे मेहमान हैं पस तुम मुझे (इनके बारे में) शर्मसार न करो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ ﴿٦٩﴾

69. और अल्लाह (के ग़ज़ब) से डरो और मुझे रुस्वा न करो।

قَالُوۡۤا اَوَلَمۡ نَنۡهَكَ عَنِ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٧٠﴾

70. वोह (बदमस्त लोग) बोले ! (ऐ लूत !) क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों (की हिमायत) से मना' नहीं किया था।

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىۡۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ فٰعِلِيۡنَ ؕ﴿٧١﴾

71. लूत (عليه السلام)ने कहा : येह मेरी क़ौमकी बेटियां हैं अगर तुम कुछ करना चाहते हो तो (बजाए बद किर्दारी के इनसे निकाह़ कर लो)।

لَعَمۡرُكَ اِنَّهُمۡ لَفِىۡ سَكۡرَتِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿٧٢﴾

72. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप की उ़म्रे मुबारक की क़सम, बेशक येह लोग (भी क़ौमे लूतकी तरह़) अपनी मस्ती में सरगर्दां फिर रहे हैं।

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُشۡرِقِيۡنَ ۙ﴿٧٣﴾

73. पस उन्हें तुलूए़ आफ़्ताब के साथ ही सख़्त आतशीं कड़कने आ लिया।

فَجَعَلۡنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ؕ﴿٧٤﴾

74. सो हमने उनकी बस्तीको ज़ेरो ज़बर कर दिया और हमने उन पर पथ्थरकी तरह सख्त मिट्टी के कंकर बरसाए।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ﴿٧٥﴾

75. बेशक इस (वाक़िए़) में अह्ले फ़िरासत के लिए निशानियां हैं।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ﴿٧٦﴾

76. और बेशक वोह बस्ती एक आबाद रास्ते पर वाक़े' है।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ﴿٧٧﴾

77. बेशक इस (वाक़िअए क़ौमे लूत) में अह्ले ईमानके लिए निशानी (इ़ब्रत) है।

وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ۙ﴿٧٨﴾

78. और बेशक बाशिन्दगाने ऐका (या'नी घनी झाड़ियों के रेहनेवाले) भी बड़े ज़ालिम थे।

وقف لازم

ع ١٩ ٥ ٥

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَ اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ
مُّبِيْنٍ ؕ﴿٧٩﴾

79. पस हमने उनसे (भी) इन्तिक़ाम लिया, और येह दोनों (बस्तियां) खुले रास्ते पर (मौजूद) हैं।

وَ لَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ
الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿٨٠﴾

80. और बेशक वादिए हिज्रके बाशिन्दोंने भी रसूलों को झुटलाया॥

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ۙ﴿٨١﴾

81. और हमने उन्हें (भी) अपनी निशानियां दीं मगर वोह उनसे रू गर्दानी करते रहे॥

وَ كَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

82. और वोह लोग बे ख़ौफ़ो ख़तर पहाड़ों में घर तराश्ते थे॥

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۙ﴿٨٣﴾

83. तो उन्हें (भी) सुब्ह़ करते ही ख़ौफ़नाक कड़कने आ पकड़ा।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ؕ﴿٨٤﴾

84. सो जो (माल) वोह कमाया करते थे वोह उनसे (अल्लाहके अ़ज़ाब) को दफ़ा' न कर सका।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ السَّاعَةَ
لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

85. और हमने आस्मानों और ज़मीनको और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है अ़बस पैदा नहीं किया, और यक़ीनन क़ियामत की घड़ी आनेवाली है सो (ऐ अख़्लाके मुजस्सम !) आप बड़े हुस्नो ख़ूबी के साथ दरगुज़र करते रहिए।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

86. बेशक आपका रबही सबको पैदा फ़रमानेवाला खूब जाननेवाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَ
الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾

87. और बेशक हमने आपको बार बार दोहराई जानेवाली सात आयतें (या'नी सूरए फ़ातिह़ा) और बड़ी अ़ज़्मतवाला क़ुरआन अ़ता फ़रमाया है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ

88. आप उन चीज़ों की तरफ़ निगाह उठा कर भी न देखिए जिनसे हमने काफ़िरों के गिरोहों को (चंद रोज़ह)

اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

ऐश के लिए बेहरामंद किया है, और उन (की गुमराही) पर रंजीदह ख़ातिर भी न हों और अहले ईमान (की दिलजूई) के लिए अपने (शफ़्क़तो इल्तिफ़ात के) बाज़ू झुकाए रखिए।

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ ج

89. और फ़रमा दीजिए कि बेशक (अब) मैं ही (अ़ज़ाबे इलाहीका) वाज़ेह़-व-सरीह़ डर सुनानेवाला हूं।

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ لا

90. जैसा (अ़ज़ाब) कि हमने तक़्सीम करनेवालों (या'नी यहूदो नसारा) पर उतारा था।

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾

91. जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े (कर के तक़्सीम) कर डाला (या'नी मुवाफ़िक़ आयतों को मान लिया और ग़ैर मुवाफ़िक़ को न माना)।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ لا

92. सो आपके रबकी क़सम ! हम उन सबसे ज़रूर पुरसिश करेंगे।

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ الربع

93. उन आ'माल से मु-त-अ़ल्लिक़ जो वोह करते रहे थे।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾

94. पस आप वोह (बातें) ए'लानिया केह डालें जिनका आपको हुक्म दिया गया है और आप मुशरिकों से मुंह फेर लीजिए।

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ لا

95. बेशक मज़ाक़ करनेवालों (को अंजाम तक पहुंचाने) के लिए हम आपको काफ़ी हैं।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ج فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. जो अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद बनाते हैं सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ لا

97.और बेशक हम जानते हैं कि आपका सीनए (अक़्दस) उन बातों से तंग होता है जो वोह केहते हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ لا

98. सो आप ह़म्द के साथ अपने रबकी तस्बीह़ किया करें और सुजूद करनेवालों में (शामिल) रहा करें।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

99. और अपने रबकी इबादत करते रहें यहां तक कि आपको (आपकी शान के लाइक़) मुक़ामे यक़ीन मिल जाए (या'नी इन्शिराहे़ कामिल नसीब हो जाए या लम्हए विसाले हक़्क़)।

आयातुहा 128 | 16 सूरतुन नह्लि मक्किय्यतुन 70 | रुकूआ़तुहा 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾

1. अल्लाह का वा'दा (क़रीब) आ पहुंचा सो तुम उसके चाहनेमें उ़ज्लत न करो। वोह पाक है और वोह उन चीज़ों से बरतर है जिन्हें कुफ़्फ़ार (उसका) शरीक ठेहराते हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾

2. वोही फ़रिश्तोंको वह़ी के साथ (जो जुम्ला ता'लीमाते दीन की रूह़ और जान है) अपने हुक्मसे अपने बंदों में से जिस पर चाहता है नाज़िल फ़रमाता है कि (लोगोंको) डर सुनाओ कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं सो मेरी परहेज़गारी इख़्तियार करो।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾

3. उसीने आस्मानों और ज़मीनको दुरुस्त तदबीर के साथ पैदा फ़रमाया, वोह उन चीज़ोंसे बरतर है जिन्हें कुफ़्फ़ार (उसका) शरीक गरदानते हैं।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

4. उसीने इन्सान को एक तौलीदी क़तरे से पैदा फ़रमाया, फिर भी वोह (अल्लाहके हुज़ूर मुतीअ़ होने की बजाए) खुला झगड़ालू बन गया।

وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّ مَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

5. और उसीने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा फ़रमाए, उनमें तुम्हारे लिए गर्म लिबास है और (दूसरे) फ़वाइद हैं और उनमें से बा'ज़ को तुम खाते (भी) हो।

وَ لَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ

6. और उनमें तुम्हारे लिए रौनक़ (और दिलकशी भी) है

وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦

जब तुम शाम को चरागाह से (वापस) लाते हो और जब तुम सुब्ह को (चराने के लिए) ले जाते हो।

وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ ۝٧

7. और येह (जानवर) तुमहारे बोझ (भी) उन शहरों तक उठा ले जाते हैं जहां तुम बिग़ैर जान्काह मशक़्क़त के नहीं पहुंच सक्ते थे, बेशक तुम्हारा रब निहायत शफ़्क़तवाला निहायत महरबान है।

وَّالْخَيْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ زِيْنَةً ؕ وَ يَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨

8. और (उसीने) घोड़ों और ख़च्चरों और गधों को (पैदा किया) ताकि तुम उन पर सवारी कर सको और वोह (तुम्हारे लिए) बाइसे ज़ीनत भी हों, और वोह (मज़ीद ऐसी बा ज़ीनत सवारियों को भी) पैदा फ़रमाएगा जिन्हें तुम (आज) नहीं जानते।

وَ عَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَ لَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩ ع

9. और दरमियानी राह अल्लाह (के दरवाज़े) पर जा पहुंचती है और उसमें से कई टेढ़ी राहें भी (निकलती) हैं, और अगर वोह चाहता तो तुम सब ही को हिदायत फ़रमा देता।

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّ مِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠

10. वोही है जिसने तुम्हारे लिए आस्मान की जानिब से पानी उतारा, उसमें से (कुछ) पीनेका है और उसी में से (कुछ) शजरकारी का है (जिससे नबातात, सब्ज़े और चरागाहें उगती हैं) जिनमें तुम (अपने मवेशी) चराते हो।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَ الزَّيْتُوْنَ وَ النَّخِيْلَ وَ الْاَعْنَابَ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١

11. उसी पानी से तुम्हारे लिए खेत और ज़ैतून और खजूर और अँगूर और हर क़िस्मके फल (और मेवे) उगाता है, बेशक इसमें ग़ौरो फ़िक्र करनेवाले लोगों के लिए निशानी है।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ۙ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ وَ النُّجُوْمُ

12. और उसीने तुम्हारे लिए रात और दिनको और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र कर दिया, और तमाम सितारे भी

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

उसीकी तद्बीर (से निज़ाम) के पाबंद हैं, बेशक उसमें अ़क़्ल रखनेवाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

وَ مَا ذَرَاَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

13. और (हैवानात,नबातात और मा'दनियात वग़ैरह में से बक़िय्या) जो कुछ भी उसने तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा फ़रमाया है जिनके रंग (या'नी जिन्सें, नौऐं, किस्में, ख़वास और मनाफ़े') अलग अलग हैं (सब तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र हैं), बेशक उसमें नसीह़त क़ुबूल करनेवाले लोगों के लिए निशानी है।

وَ هُوَ الَّذِیْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِیًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِیْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. और वोही है जिसने (फ़िज़ाओ बर्र के अ़लावा) बह़र (या'नी दरियाओं और समन्दरों) को भी मुसख़्ख़र फ़रमा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा (व पसन्दीदा) गोश्त खाओ और तुम उसमें से मोती (वग़ैरह) निकालो जिन्हें तुम ज़ेबाइश के लिए पहनते हो, और (ऐ इन्सान!) तू कश्तियों (और जहाज़ों) को देखता है जो (दरियाओं और समन्दरोंका) पानी चीरते हुऐ उसमें चले जाते हैं, और (येह सब कुछ इसलिए किया) ताकि तुम (दूर दूर तक) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करो और येह कि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।

وَ اَلْقٰى فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَ اَنْهٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۙ﴿۱۵﴾

15. और उसीने ज़मीन में (मुख़्तलिफ़ माद्दों को बाहम मिला कर) भारी पहाड़ बना दिए ताकि ऐसा न हो कि कहीं वोह (अपने मदारमें हरकत करते हुऐ) तुम्हें ले कर कांपने लगे और नेहरें और (क़ुदरती) रास्ते (भी) बनाए ताकि तुम (मंज़िलों तक पहुंचने के लिए) राह पा सको।

وَ عَلٰمٰتٍ ؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. और (दिनको राह तलाश करने के लिए) अ़लामतें बनाईं, और (रातको) लोग सितारों के ज़रीए (भी) राह पाते हैं।

اَفَمَنْ یَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا یَخْلُقُ ؕ

17. क्या वोह ख़ालिक़ जो (इतना कुछ) पैदा फ़रमाए

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾

उसके मिस्ल हो सक्ता है जो (कुछ भी) पैदा न कर सके, क्या तुम लोग नसीह़त क़ुबूल नहीं करते ?

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

18. और अगर तुम अल्लाहकी ने'मतों को शुमार करना चाहो तो उन्हें पूरा शुमार न कर सकोगे, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ ؕ

20. और येह (मुशरिक) लोग जिन (बुतों) को अल्लाह के सिवा पूजते हैं वोह कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वोह ख़ुद पैदा किए गए हैं।

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٢ ٨

21. (वोह) मुर्दे हैं जिन्दा नहीं, और (उन्हें इतना भी) शऊ़र नहीं कि (लोग) कब उठाए जाएंगे।

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. तुम्हारा मा'बूद , मा'बूदे यक्ता है, पस जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वोह सरकशो मु-त-कब्बिर हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

23. येह बात ह़क़्क़ो साबित है कि अल्लाह जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ वोह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वोह सरकशों मु-त-कब्बिरों को पसंद नहीं करता।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ ۙ

24. और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रबने क्या नाज़िल फ़रमाया है? (तो) वोह केहते हैं अगली क़ौमों के झूटे क़िस्से (उतारे हैं)।

لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ

25. (येह सब कुछ इस लिए केह रहे हैं) ताकि रोज़े क़ियामत वोह अपने (आ'माले बद के) पूरे पूरे बोझ

يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا
يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾

उठाएं और कुछ बोझ उन लोगों के भी (उठाएं) जिन्हें (अपनी) जहालत के ज़रीए गुमराह किए जा रहे हैं, जान लो ! बहुत बुरा बोझ है जो येह उठा रहे हैं।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى
اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ
عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ
وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

26. बेशक उन लोगोंने (भी) फ़रेब किया जो इनसे पहले थे तो अल्लाहने उन (के मक्रो फ़रेब) की इमारतको बुनियादों से उखाड़ दिया तो उनके ऊपरसे उन पर छत गिर पड़ी और उन पर उस तरफ़से अज़ाब आ पहुंचा जिसका उन्हें कुछ ख़याल भी न था।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ
اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾

27. फिर वोह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा और इर्शाद फ़रमाएगा मेरे वोह शरीक कहां हैं जिनके ह़क़ में तुम (मोमिनों से) झगड़ा करते थे, वोह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कहेंगे : बेशक आज काफ़िरों पर (हर क़िस्म की) रुस्वाई और बरबादी है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا
نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌ ۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. जिन की रूहें फ़रिश्ते इस ह़ालमें क़ब्ज़ करते हैं कि वोह अपनी जानों पर (बदस्तूर) ज़ुल्म किए जा रहे हों, सो वोह (रोज़े क़ियामत) इताअ़तो फ़रमांबर्दारी का इज़्हार करेंगे (और कहेंगे) हम (दुनिया में) कोई बुराई नहीं किया करते थे, क्यों नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. पस तुम दोज़ख़के दरवाजों से दाख़िल हो जाओ, तुम उसमें हमेशा रेहनेवाले हो, सो तकब्बुर करनेवालों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ

30. और परहेज़गार लोगों से कहा जाए कि तुम्हारे रबने

اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ
وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾

क्या नाज़िल फ़रमाया है? वोह केहते हैं : (दुनिया-व-आख़िरत की) भलाई (उतारी है), उन लोगोंके लिए जो नेकी करते रहे इस दुनियामें (भी) भलाई है, और आख़िरत का घर तो ज़रूर ही बेहतर है, और परहेज़गारों का घर क्या ही ख़ूब है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا
يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ
الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۱﴾

31. सदा बहार बाग़ात हैं जिनमें वोह दाख़िल होंगे जिनके नीचे से नेहरें बेह रही होंगी, उनमें उनके लिए जो कुछ वोह चाहेंगे (मुयस्सर) होगा, इस त़रह़ अल्लाह परहेज़गारों को सिला अ़ता फ़रमाता है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ
يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا
الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. जिनकी रूहें फ़रिश्ते इस ह़ाल में क़ब्ज करते हैं कि वोह (नेकी-व-ताअ़तके बाइ़स) पाकीज़ा और ख़ुशो ख़ुर्रम हों, (उनसे फ़रिश्ते क़ब्जे रूह़ के वक़्त ही केह देते हैं) तुम पर सलामती हो, तुम जन्नतमें दाख़िल हो जाओ उन (आ'माले सालेह़ा) के बाइ़स जो तुम किया करते थे।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ
فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا
ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. येह और किस चीज़का इन्तिज़ार कर रहे हैं सिवाए इसके कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएं या आपके रबका हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचे, येही कुछ उन लोगों ने (भी) किया था जो उनसे पेहले थे, और अल्लाहने उन पर जुल्म नहीं किया था लेकिन वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म किया करते थे।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾ ع ۴ ۹ ۱۰

34. सो जो आ'माल उन्होंने किए थे उनही की सज़ाएं उनको पहुंचीं और उसी (अ़ज़ाब)ने उन्हें आ घेरा जिसका वोह मज़ाक उड़ाया करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ

35. और मुशरिक लोग केहते हैं : अगर अल्लाह चाहता तो

اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ
نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ
الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى
الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۳۵﴾

हम उसके सिवा किसी भी चीज़की परस्तिश न करते, न ही हम और न हमारे बापदादा, और न हम उसके (हुक्म के) बिग़ैर किसी चीज़को ह़राम क़रार देते, येही कुछ उन लोगोंने (भी) किया था जो इनसे पहले थे, तो क्या रसूलों के ज़िम्मे (अल्लाहके पैग़ाम और अह़काम) वाज़ेह तौर पर पहुंचा देने के अ़लावा भी कुछ है?

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا
الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ
وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَیْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ
فَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۶﴾

36. और बेशक हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि (लोगो) तुम अल्लाह की इ़बादत करो और तागूत (या'नी शैतान और बुतों की इताअ़तो परस्तिश) से इज्तिनाब करो, सो उनमें बा'ज़ वोह हुए जिन्हें अल्लाहने हिदायत फ़रमा दी और उनमें बा'ज वोह हुऐ जिन पर गुमराही (ठीक) साबित हुई, सो तुम लोग ज़मीन में सैरो सियाह़त करो और देखो कि झुटलानेवालों का क्या अंजाम हुवा।

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا
یَهْدِیْ مَنْ یُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ
نّٰصِرِیْنَ ﴿۳۷﴾

37. अगर आप उनके हिदायत पर आ जाने की शदीद तलब रखते हैं तो (आप अपनी तबीअ़ते मुतह्हरा पर इस क़दर बोझ न लाएं) बेशक अल्लाह जिसे गुमराह ठेहरा देता है उसे हिदायत नहीं फ़रमाता और उन के लिए कोई मददगार नहीं होता।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَیْمَانِهِمْ ۙ لَا
یَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ یَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا
عَلَیْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۙ

38. और येह लोग बड़ी शद्दो मद से अल्लाहकी क़स्में खाते हैं कि जो मर जाए अल्लाह उसे (दोबारा) नहीं उठाएगा, क्यों नहीं उसके ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

لِیُبَیِّنَ لَهُمُ الَّذِی یَخْتَلِفُوْنَ
فِیْهِ وَلِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ

39. (मुर्दों को उठाया जाना इस लिए है) ताकि उनके लिए वोह (ह़क़) बात वाज़ेह़ कर दे जिसमें वोह लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और येह कि काफ़िर लोग जान लें कि

كَانُوا كٰذِبِينَ ﴿٣٩﴾

हक़ीक़त में वोही झूटे हैं।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَآ أَرَدْنٰهُ أَنْ
نَّقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾ ع

40. हमारा फ़रमान तो किसी चीज़के लिए सिर्फ़ इसी क़दर होता है कि जब हम उस (को वुजूदमें लाने) का इरादा करते हैं तो हम उसे फ़रमा देते हैं ''हो जा'' पस वोह हो जाती है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ
مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْاٰخِرَةِ أَكْبَرُ ۘ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

41. और जिन्होंने अल्लाहकी राह में हिजरतकी इसके बाद कि उन पर (तरह़ तरह़ के) ज़ुल्म तोड़े गए तो हम ज़रूर उन्हें दुनिया (ही) में बेहतर ठिकाना देंगे, और आख़िरतका अज्र तो यक़ीनन बहुत बड़ा है, काश ! वोह (इस राज़को) जानते होते।

وقف لازم

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

42. जिन लोगोंने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कल किए रखते हैं।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا
رِجَالًا نُّوحِيٓ إِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوٓا أَهْلَ
الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

43. और हमने आपसे पहले भी मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा जिनकी तरफ़ हम वह़ी भेजते थे सो तुम अह्ले ज़िक्रसे पूछ लिया करो अगर तुम्हें ख़ुद (कुछ) मा'लूम न हो।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ
الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ
إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

44. (उन्हें भी) वाज़ेह दलाइल और किताबों के साथ (भेजा था) और (ऐ नबीए मुकर्रम !) हमने आप की तरफ़ ज़िक्रे अ़ज़ीम (क़ुरआन) नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप लोगों के लिए वोह (पैग़ाम और अह़्काम) ख़ूब वाज़ेह कर दें जो उनकी तरफ़ उतारे गए हैं और ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

النصف

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ
أَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْأَرْضَ
أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

45. क्या वोह बुरे मक्रो फ़रेब करनेवाले लोग इस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीनमें धंसा दे या (किसी) ऐसी जगहसे उन पर अ़ज़ाब भेज दे जिसका उन्हें कोई ख़याल भी न हो।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

46. या उनकी नक़्लो ह़रकत (सफ़र और शुग़ूले तिजारत) के दौरान ही उन्हें पकड़ ले सो वोह अल्लाहको आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

47. या उन्हें उनके ख़ौफ़ ज़दा होने पर पकड़ ले, तो बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़ निहायत महरबान है ।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

48. क्या उन्होंने उन (सायादार) चीज़ोंकी तरफ़ नहीं देखा जो अल्लाहने पैदा फ़रमाई हैं (कि) उनके साऐ दाएं और बाएं अतराफ़से अल्लाहके लिए सज्दा करते हुऐ फिरते रेहते हैं और वोह (दर ह़क़ीक़त) ताअ़तो आ़जिज़ी का इज़हार करते हैं।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

49. और जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है जुम्ला जानदार और फ़रिश्ते, अल्लाह (ही) को सज्दा करते हैं और वोह (ज़रा भी) ग़ुरूरो तकब्बुर नहीं करते ।

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾ السجدة

50. वोह अपने रबसे जो उनके ऊपर है डरते रेहते हैं और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है (उसे) बजा लाते हैं।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

51. और अल्लाहने फ़रमाया है तुम दो मा'बूद मत बनाओ, बेशक वोही (अल्लाह) मा'बूदे यक्ता है, और तुम मुझ ही से डरते रहो।

وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

52. और जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है (सब) उसीका है और (सबके लिए) उसीकी फरमांबरदारी वाजिब है। तो क्या तुम ग़ैर अज़ ख़ुदा (किसी) से डरते हो।

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾

53. और तुम्हें जो ने'मत भी ह़ासिल है सो वोह अल्लाह ही की जानिब से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचती है तो तुम उसीके आगे गिर्या-व-ज़ारी करते हो।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. फिर जब अल्लाह उस तक्लीफ़ को तुमसे दूर फ़रमा देता है तो तुममें से एक गिरोह उस वक्त अपने रबसे शिर्क करने लगता है।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. (येह कुफ़्रो शिर्क इस लिए) ताकि वोह उन (ने'मतों) की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें अता कर रखी हैं, पस (ऐ मुशरिको ! चंद रोज़ा) फ़ाइदा उठा लो फिर तुम अ़नक़रीब (अपने अंजामको) जान लोगे।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. और येह उन (बुतों)के लिए जिन (की ह़क़ीक़त) को वोह ख़ुद भी नहीं जानते उस रिज़्कमें से हिस्सा मुक़र्रर करते हैं जो हमने उन्हें अ़ता कर रखा है । अल्लाह की क़सम ! तुमसे उस बोहतानकी निस्बत ज़रूर पूछगछ की जाएगी जो तुम बांधा करते हो।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. और येह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) अल्लाह के लिए बेटियां मुक़र्रर करते हैं वोह (इससे) पाक है और अपने लिए वोह कुछ (या'नी बेटे) जिनकी वोह ख़्वाहिश करते हैं।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۚ ﴿٥٨﴾

58. और जब उनमें से किसी को लड़की (की पैदाइश)की ख़बर सुनाई जाती है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और वोह ग़ुस्से से भर जाता है।

يَتَوٰرٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. वोह लोगोंसे छुपा फिरता है (बज़ो'मे ख़ीश) उस बुरी ख़बरकी वजहसे जो उसे सुनाई गई है, (अब येह सोचने लगता है कि) आया उसे ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ (ज़िन्दा) रखे या उसे मिट्टीमें दबा दे (या'नी ज़िन्दा दर गोर कर दे), ख़बरदार ! कितना बुरा फ़ैसला है जो वोह करते हैं।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ

60. उन लोगोंकी जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते (येह) निहायत बुरी सिफ़त है, और बुलंद तर सिफ़त

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ ع

अल्लाह ही की है और वोह ग़ालिब हिक्मतवाला है।

ع ١٣

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. और अगर अल्लाह लोगोंको उनके जुल्मके इवज़ (फ़ौरन) पकड़ लिया करता तो इस (ज़मीन) पर किसी जानदार को न छोड़ता लेकिन वोह उन्हें मुक़र्ररा मीआ़द तक मोह्लत देता है, फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ पहुंचता है तो वोह न एक घड़ी पीछे हो सक्ते हैं और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और वोह अल्लाह के लिए वोह कुछ मुक़र्रर करते हैं जो (अपने लिए) नापसंद करते हैं और उनकी जबानें झूट बोलती हैं कि उनके लिए भलाई है, (हरगिज़ नहीं) ह़क़ीक़त येह है कि उनके लिए दोज़ख़ है और येह (दोज़ख़ में) सबसे पहले भेजे जाएंगे (और उसमें हमेशा के लिए छोड़ दिए जाएंगे)।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

63. अल्लाहकी क़सम ! यक़ीनन हमने आपसे पहले (भी बहुतसी) उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतानने उन (उम्मतों)के लिए उनके (बुरे) आ'माल आरास्ता-व-ख़ुशनुमा कर दिखाए, सो वोही (शैतान) आज उनका दोस्त है और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और हमने आपकी तरफ़ किताब नहीं उतारी मगर इस लिए कि आप उन पर वोह (उमूर) वाज़ेह़ कर दें जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं और (इसलिए कि येह किताब) हिदायत और रह़मत है उस क़ौमके लिए जो ईमान ले आई है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ

65. और अल्लाहने आस्मान की जानिबसे पानी उतारा और उसके ज़रीए ज़मीन को उसके मुर्दह (या'नी बंजर) होने के बाद ज़िन्दह (या'नी सर सब्ज़ो शादाब) कर दिया।

ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ ع

बेशक इसमें (नसीह़त) सुनने वालों के लिए निशानी है।

وَ اِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. और बेशक तुम्हारे लिए मवेशियोंमें (भी) मुक़ामे ग़ौर है, हम उनके जिस्मों के अंदरकी उस चीज़से जो आंतों के(बा'ज़) मश्मूलात और ख़ून के इख़्तेलातसे (वुजूदमें आती है) ख़ालिस दूध निकाल कर तुम्हें पिलाते हैं (जो) पीनेवालों के लिए फ़रह़त बख़्श होता है।

وَ مِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और खजूर और अँगूरके फलोंसे तुम शकर और (दीगर) उम्दा ग़िज़ाएं बनाते हो, बेशक उसमें अह्ले अ़क़्लके लिए निशानी है।

وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾ۙ

68. और आपके रबने शहदकी मख्खी के दिलमें (ख़याल) डाल दिया के तू बा'ज़ पहाड़ों में अपने घर बना और बा'ज़ दरख़्तोंमें और बा'ज़ छप्परों में (भी) जिन्हें लोग (छतकी तरह ऊंचा बनाते हैं)।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. पस तू हर क़िस्मके फलोंसे रस चूसा कर फिर अपने रबके (सुझाए हुए) रास्तों पर (जो उन फलों और फूलों तक जाते हैं जिनसे तूने रस चूसना है, दूसरी मख्खियों के लिए भी) आसानी फ़राहम करते हुऐ चला कर,उनके शिकमोंसे एक पीनेकी चीज़ निकलती है (वोह शहद है) जिसके रंग जुदागाना होते हैं, उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उसमें ग़ौरो फ़िक्र करनेवालों के लिए निशानी है।

وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ؕ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ

70. और अल्लाहने तुम्हें पैदा फ़रमाया है फिर वोह तुम्हें वफ़ात देता (या'नी तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करता) है। और तुममें से किसीको नाक़िस तरीन उ़म्र (बुढ़ापा) की तरफ़ फेर दिया जाता है ताकि(ज़िन्दगीमें बहुत कुछ) जान लेने

إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ ع ٩ ع ٥ ١٥

के बाद अब कुछभी न जाने (या'नी इन्सान मरनेसे पहले अपनी बे बसी-व-कम माएगी का मन्ज़र भी देख ले), बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी क़ुदरतवाला है।

وَ اللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي
الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ
رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

71. और अल्लाहने तुममें से बा'ज़ को बा'ज़ पर रिज़्क़ (के दरजात) में फ़ज़ीलत दी है (ताकि वोह तुम्हें हुक्मे इन्फ़ाक़ के ज़रीए आज़माए), मगर जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वोह अपनी दौलत (के कुछ हिस्से को भी) अपने ज़ेरे दस्त लोगों पर नहीं लौटाते (या'नी ख़र्च नहीं करते) ह़ालां कि वोह सब उसमें (बुन्यादी ज़रूरियात की ह़द तक) बराबर हैं, तो क्या वोह अल्लाहकी ने'मतोंका इन्कार करते हैं।

وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّ رَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ
وَ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. और अल्लाहने तुम ही में से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा फ़रमाए और तुम्हारे जोड़ों (या'नी बीवियों) से तुम्हारे लिए बेटे और पोते/नवासे पैदा फ़रमाए और तुम्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया, तो क्या फिर भी वोह (ह़क़को छोड़ कर) बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाहकी ने'मत से वोह नाशुक्री करते हैं।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. और अल्लाह के सिवा उन (बुतों) की परस्तिश करते हैं जो आस्मानों और ज़मीनसे उनके लिए किसी क़दर रिज़्क़ देने के भी मालिक नहीं हैं और न ही कुछ क़ुदरत रखते हैं।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. पस तुम अल्लाह के लिए मिस्ल न ठेहराया करो, बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا
يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّ مَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا

75. अल्लाहने एक मिसाल बयान फ़रमाई है (कि) एक ग़ुलाम है (जो किसीकी) मिल्किय्यत में है ख़ुद) किसी

رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और (दूसरा) वोह शख़्स है जिसमें हमने अपनी तरफ़से उ़म्दा रोज़ी अ़ता फ़रमाई है सो वोह उसमें से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वोह बराबर हो सक्ते हैं, सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उनमें से अक्सर (बुन्यादी ह़क़ीक़त को भी) नहीं जानते।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَ مَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَ هُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ ع ۱۰ ع ۶ ۱۶

76. और अल्लाहने दो (ऐसे) आदमियों की मिसाल बयान फ़रमाई है जिनमें एक गूंगा है वोह किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और वोह अपने मालिक पर बोझ है वोह (मालिक) उसे जिधर भी भेजता है कोई भलाई ले कर नहीं आता, क्या वोह (गूंगा) और (दूसरा) वोह शख़्स जो (इस मन्सबका ह़ामिल है कि) लोगों को अ़द्लो इन्साफ़ का हुक्म देता है और वोह ख़ुद भी सीधी राह पर गामज़न है (दोनों) बराबर हो सक्ते हैं।

وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾

77. और आस्मानों और ज़मीन का (सब) ग़ैब अल्लाह ही के लिए है और क़ियामत के बपा होनेका वाक़िआ़ इस क़दर तेज़ीसे होगा जैसे आँखका झपकना या उससे भी तेज़तर, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَ اللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾

78. और अल्लाहने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटसे (इस ह़ालतमें) बाहर निकाला कि तुम कुछ न जानते थे और उसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र बजा लाओ।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا

79. क्या उन्होंने परिन्दों को नहीं देखा जो आस्मानकी हवामें (क़ानूने ह़रकतो परवाज़के) पाबंद (हो कर उड़ते

اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

रहते) हैं, उन्हें अल्लाहके (क़ानूनके) सिवा कोई चीज़ थामे हुए नहीं है। बेशक उस (परवाज़ के उसूल) में ईमानवालों के लिए निशानियां हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُیُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُیُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا یَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَ یَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰى حِیْنٍ ﴿۸۰﴾

80. और अल्लाहने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरोंको (मुस्तक़िल) सुकूनत की जगह बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों की खालोंसे (आ़रिज़ी) घर (या'नी ख़ैमे) बनाए जिन्हें तुम अपने सफ़र के वक़्त और (दौराने सफ़र मंजिलों पर) अपने ठहरने के वक्त हलका फुलका पाते हो और (उसी अल्लाहने तुम्हारे लिए) भेड़ों और दुंबों की ऊन और ऊंटोकी पश्म और बकरियों के बालों से घरेलू इस्ते'माल और (मईशतो तिजारत में) फ़ाइदा उठाने के अस्बाब बनाए (जो) मुक़र्ररा मुद्दत तक (हैं)।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِیْلَ تَقِیْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾

81. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा कर्दह कई चीज़ों के साए बनाए और उसने तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाहगाहें बनाईं और उसने तुम्हारे लिए (कुछ) ऐसे लिबास जो तुम्हें गरमीसे बचाते हैं और (कुछ) ऐसे लिबास जो तुम्हें शदीद जंगमें (दुश्मन के वार से) बचाते हैं, इस तरह़ अल्लाह तुम पर अपनी ने'मते (कफ़ालतो ह़िफ़ाज़त) पूरी फ़रमाता है ताकि तुम (उसके हुज़ूर) सरेनियाज़ ख़म कर दो।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۸۲﴾

82. सो अगर (फिर भी) वोह रू गर्दानी करें तो (ऐ नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म !) आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (मेरे पैग़ाम और अह़्काम को) साफ़ साफ़ पहुंचा देना है।

یَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ یُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع ۱۱ ۱۷

83. येह लोग अल्लाहकी ने'मत को पहचानते हैं फिर उसका इन्कार करते हैं और उनमें से अक्सर काफ़िर हैं।

وَ يَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ لَا
هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. और जिस दिन हम हर उम्मतसे (उसके रसूलको उसके आ'माल पर) गवाह बना कर उठाएंगे फिर काफ़िर लोगोंको (कोई उ़ज़्र पेश करने की) इजाज़त नहीं दी जाएगी और न (उस वक़्त) उनसे तौबा-व-रुजूअ़ का मुतलिबा किया जाएगा।

وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. और जब ज़ालिम लोग अ़ज़ाब देख लेंगे तो न ही उनसे (उस अ़ज़ाबकी) तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ
قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ
كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا
اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. और जब मुशरिक लोग अपने (खुद साख़्ता) शरीकों को देखेंगे : तो कहेंगे ऐ हमारे रब! येही हमारे शरीक थे जिनकी हम तुझे छोड़ कर परस्तिश करते थे, पस वोह (शुरकाअ) उन्हें (जवाबन) पैग़ाम भेजेंगे कि बेशक तुम झूटे हो।

وَ اَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِۨالسَّلَمَ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. और येह (मुशरिकीन) उस दिन अल्लाहके हुज़ूर आ़जिज़ी-व-फ़रमां बरदारी ज़ाहिर करेंगे और उनसे वोह सारा बोहतान जाता रहेगा जो येह बांधा करते थे।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. जिन लोगोंने कुफ़्र किया और (दूसरोंको) अल्लाहकी राह से रोकते रहे हम उनकेअ़ज़ाब पर अ़ज़ाबका इज़ाफ़ा करेंगे इस वजह से कि वोह फ़साद अंगेज़ी करते थे।

وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَ جِئْنَا بِكَ
شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى
وَّ رَحْمَةً وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ ع ١٢ ٦ ١٨

89. और (येह) वोह दिन होगा (जब) हम हर उम्मतमें उनही में से खुद उन पर एक गवाह उठाएंगे और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !)हम आपको उन सब (उम्मतों और पयग़म्बरों) पर गवाह बना कर लाएंगे, और हमने आप पर वोह अ़ज़ीम किताब नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का बड़ा वाज़ेह बयान है और मुसलमानों के लिए हिदायत और रह़मत और बिशारत है।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ
وَإِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ
الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ج
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90. बेशक अल्लाह (हर एक केसाथ) अद्ल और एह्सान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबतदारों को देते रेहनेका और बेहयाई और बुरे कामों और सरकशी-व-ना फ़रमानी से मना' फ़रमाता है, वोह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है ताकि तुम खूब याद रखो।

وَأَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ إِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا
تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ
قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ط
إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾

91. और तुम अल्लाहका अ़हद पूरा कर दिया करो जब तुम अ़हद करो और क़स्मों को पुख़्ता कर लेने के बाद उन्हें मत तोड़ा करो हा़लांकि तुम अल्लाहको अपने आप पर ज़ामिन बना चुके हो, बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ط تَتَّخِذُوْنَ
أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُوْنَ
أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ط إِنَّمَا
يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ط وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और उस औ़रतकी तरह़ न हो जाओ जिसने अपना सूत मज़बूत कात लेनेके बाद तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला, तुम अपनी क़स्मोंको अपने दरमियान फ़रेबकारी का ज़रीआ़ बनाते हो ताकि (इस तरह) एक गिरोह दूसरे गिरोहसे ज़ियादह फ़ाइदा उठानेवाला हो जाए, बात येह है कि अल्लाह (भी) तुम्हें उसीके ज़रीए़ आज़माता है, और वोह तुम्हारे लिए क़ियामत के दिन उन बातोंको ज़रूर वाज़ेह़ फ़रमा देगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَلَتُسْئَلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और अगर अल्लाह चाहता तो तुम (सब) को एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमा देता है, और तुमसे उन कामों की निस्बत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम अंजाम दिया करते थे।

وَلَا تَتَّخِذُوْا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا

94. और तुम अपनी क़स्मों को आपसमें फ़रेबकारी का ज़रीआ़ न बनाया करो वरना क़दम (इस्लाम पर) जम जाने

وَ تَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَ لَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾

के बाद लड़खड़ा जाएगा और तुम इस वजहसे कि अल्लाहकी राह से रोकते थे बुरे अंजामका मज़ा चखोगे और तुम्हारे लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।

وَ لَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا
قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. और अल्लाहके अ़दह ह़क़ीर सी क़ीमत (या'नी दुन्यवी मालो दौलत) के इ़वज़ मत बेच डाला करो, बेशक जो (अज्र) अल्लाहके पास है वोह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम (इस राज़को) जानते हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۫ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ
وَ لَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. जो (मालो ज़र) तुम्हारे पास है फ़ना हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रेहनेवाला है, और हम उन लोगोंको जिन्होंने सब्र किया ज़रूर उनका अज्र अ़ता फ़रमाएंगे उनके अच्छे आ'माल के इ़वज़ जो वोह अंजाम देते रहे थे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً
طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

97. जो कोई नेक अ़मल करे (ख़्वाह) मर्द हो या औ़रत जबकि वोह मोमिन हो तो हम उसे ज़रूर पाकीज़ा ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा रखेंगे और उन्हें ज़रूर उनका अज्र (भी) अ़ता फ़रमाएंगे उन अच्छे आ'माल के इ़वज़ जो वोह अंजाम देते थे।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

98. सो जब आप क़ुरआन पढ़ने लगें तो शैतान मरदूद (की वस्वसा अंदाज़ियों) से अल्लाह की पनाह मांग लिया करें।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. बेशक उसे उन लोगों पर कुछ (भी) ग़ल्बा ह़ासिल नहीं है जो ईमान लाए और अपने रब पर तवक्कल करते हैं।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ
وَ الَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع ١٣ ١١ ١٩

100. बस उसका ग़ल्बा सिर्फ़उन्हीं लोगों पर है जो उसे दोस्त बनाते हैं और जो अल्लाह के साथ शरीक करनेवाले हैं।

وَ اِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ
وَّ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا

101. और जब हम किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल देते हैं और अल्लाह (ही) बेहतर जानता है जो (कुछ) वोह नाज़िल फ़रमाता है (तो) कुफ़्फ़ार केहते हैं कि आप

اِنَّمَآ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾

तो बस अपनी तरफ़से घड़नेवाले हैं बल्कि उनमें से अक्सर लोग (आयतोंके उतारने और बदलनेकी हिक्मत) नहीं जानते।

قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿۱۰۲﴾

102. फ़रमा दीजिए : इस (क़ुरआन) को रूहुल कुद्स (जिब्रईल ﷺ)ने आप के रब की तरफ़से सच्चाई के साथ उतारा है ताकि ईमान वालोंको साबित क़दम रखे और (येह) मुसलमानों के लिए हिदायत और बिशारत है।

وَلَقَدۡ نَعۡلَمُ اَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىۡ يُلۡحِدُوۡنَ اِلَيۡهِ اَعۡجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۰۳﴾

103. और बेशक हम जानते हैं कि वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरेकीन) केहते हैं के उन्हें येह (क़ुरआन) महज़ कोई आदमी ही सिखाता है, जिस शख़्स की तरफ़ वोह बात को हक़से हटाते हुए मन्सूब करते हैं उसकी ज़बान अ़ज्मी है और येह क़ुरआन वाज़ेह-व-रौशन अ़रबी ज़बान(में) है।

اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهۡدِيۡهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۰۴﴾

104. बेशक जो लोग अल्लाहकी आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हें हिदायत (या'नी सहीह़ फ़ह्मो बसीरत की तौफ़ीक़ भी) नहीं देता और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

اِنَّمَا يَفۡتَرِى الۡكَذِبَ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡكٰذِبُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾

105. बेशक झूटी इफ़्तिरा पर्दाज़ी (भी) वोही लोग करते हैं जो अल्लाहकी आयतों पर ईमान नहीं लाते और वोही लोग झूटे हैं।

مَنۡ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِهٖۤ اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ وَقَلۡبُهٗ مُطۡمَئِنٌّ بِالۡاِيۡمَانِ وَلٰكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالۡكُفۡرِ صَدۡرًا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۰۶﴾

106. जो शख़्स अपने ईमान लाने के बाद कुफ़्र करे, सिवाए उसके जिसे इन्तिहाई मजबूर कर दिया गया मगर उसका दिल (बदस्तूर) ईमानसे मुत्मइन है, लेकिन (हां) वोह शख़्स जिसने (दोबारा) शर्हे सद्र के साथ कुफ़्र (इख़्तियार) किया सो उन पर अल्लाहकी तरफ़से ग़ज़ब है और उन के लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٧

107. येह इस वजहसे कि उन्होंने दुन्यवी ज़िन्दगीको आख़िरत पर अज़ीज़ रख्खा और इस लिए कि अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٠٨

108. येह वोह लोग हैं कि अल्लाहने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर मोहर लगा दी है और येही लोग ही (आख़िरत के अंजामसे) ग़ाफ़िल हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝١٠٩

109. येह हक़ीक़त है कि बेशक येही लोग आख़िरतमें ख़सारा उठानेवाले हैं।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا
وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١٠ ع ١٤ / ٢٠

110. फिर आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइशों (और तक्लीफ़ों) में मुब्तिला किए जाने के बाद हिजरत की (या'नी अल्लाह केलिए अपने वतन छोड़ दिए) फिर जिहाद किए और (परेशानियों पर) सब्र किए तो (ऐ हबीबे मुकर्रम!) आपका रब उसके बाद बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ
نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝١١١

111. वोह दिन (याद करें) जब हर शख़्स महज़ अपनी जानकी तरफ़से (दिफ़ाअ़ के लिए) झगड़ता हुआ हाज़िर होगा और हर जानको जो कुछ उसने किया होगा, उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ
اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا
مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ
فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ
بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝١١٢

112. और अल्लाहने एक ऐसी बस्तीकी मिसाल बयान फ़रमाई है जो (बड़े) अम्न और इत्मीनान से (आबाद) थी उसका रिज़्क़ उसके (मकीनों के) पास हर तरफ़से बड़ी वुस्अ़तो फ़राग़त के साथ आता था फिर उस बस्ती (वालों)ने अल्लाहकी ने'मतोंकी ना शुक्री की तो अल्लाहने उसे भूक और ख़ौफ़ के अ़ज़ाबका लिबास पेहना दिया उन आ'मालके सबब से जो वोह करते थे।

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

113. और बेशक उनके पास उनही में से एक रसूल आया तो उन्होंने उसे झुटलाया पस उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा और वोह ज़ालिम ही थे।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾

114. पस जो ह़लाल और पाकीज़ा रिज़्क तुम्हें अल्लाहने बख़्शा है, तुम उसमें से खाया करो और अल्लाहकी ने'मतोंका शुक्र बजा लाते रहो अगर तुम उसीकी इ़बादत करते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾

115. उसने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और ख़िन्ज़ीरका गोश्त और वोह (जानवर) जिस पर ज़ब्ह़ करते वक्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो, ह़राम किया है, फिर जो शख़्स ह़ालते इज़्तिरार (या'नी इन्तिहाई मजबूरी की ह़ालत) में हो, न (तलबे लिज़्ज़तमें अह़कामे इलाहीसे) सरकशी करनेवाला हो और न (मजबूरी की ह़दसे) तजावुज़ करनेवाला हो, तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۬ؕ ﴿۱۱۶﴾

116. और वोह झूट मत कहा करो जो तुम्हारी ज़बानें बयान करती रेहती हैं कि येह ह़लाल है और येह ह़राम है इस तरह कि तुम अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं वोह (कभी) फ़लाह नहीं पाएंगे।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

117. फ़ाइदा थोड़ा है मगर उनके लिए अ़ज़ाब (बड़ा) दर्दनाक है।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ مَا

118. और यहूद पर हमने वोही चीज़ें ह़राम की थीं जो हम पहले आपसे बयान कर चुके हैं और हमने उन पर

ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

जुल्म नहीं किया था लेकिन वोह ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म किया करते थे।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾ ع ۱۵ ۲۱

119. फिर बेशक आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने नादानीसे ग़लतियां कीं फिर उसके बाद ताइब हो गए और (अपनी) हालत दुरुस्त कर ली तो बेशक आपका रब उसके बाद बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है ।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَ لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ ۙ

120. बेशक इब्राहीम (علیہ السلام तन्हा ज़ातमें) एक उम्मत थे, अल्लाह के बड़े फ़रमां बरदार थे, हर बातिलसे कनारा कश (सिर्फ़ उसीकी तरफ़ यक्सू) थे,और मुशरिकों में से न थे।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَ هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾

121. उस (अल्लाह)की ने'मतों पर शाकिर थे,अल्लाहने उन्हें चुन (कर अपनी बारगाहमें ख़ास बरगुज़ीदा बना) लिया और उन्हें सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमा दी।

وَ اٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَ اِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ ؕ

122. और हमने उसे दुनियामें (भी) भलाई अ़ता फ़रमाई, और बेशक वोह आख़िरतमें (भी) सालेहीन में से होंगे।

ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. फिर (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हमने आपकी तरफ़ वही भेजी कि आप इब्राहीम (علیہ السلام के दीन की पैरवी करें जो हर बातिल से जुदा थे, और वोह मुशरिकों में से न थे।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. हफ़्ते का दिन सिर्फ़ उन ही लोगों पर मुक़र्रर किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ किया, और बेशक आपका रब क़ियामतके दिन उनके दरमियान उन (बातों) का फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ किया करते थे।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾

125. (ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म !) आप अपने रबकी राहकी तरफ़ ह़िक्मत और उ़म्दा नसीह़तके साथ बुलाइए और उनसे बह़स (भी) ऐसे अंदाजसे कीजिए जो निहायत ह़सीन हो, बेशक आपका रब उस शख़्सको (भी) ख़ूब जानता है जो उसकी राहसे भटक गया और हिदायत याफ़्ता लोगों को (भी) ख़ूब जानता है।

وَ اِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾

126. और अगर तुम सज़ा देना चाहो तो उतनी ही सज़ा दो जिस क़दर तक्लीफ़ तुम्हें दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यक़ीनन वोह सब्र करनेवालों के लिए बेहतर हैं।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

127. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) सब्र कीजिए और आपका सब्र करना अल्लाह ही के साथ है और आप उन (की सरकशी) पर रंजीदा ख़ातिर न हुआ करें और आप उनकी फ़रेबकारियों से (अपने कुशादा सीने में) तंगी (भी) महसूस न किया करें।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ ع ۱۶ ۲۲

128. बेशक अल्लाह उन लोगों को अपनी मइ़य्यते (ख़ास) से नवाज़ता है जो साह़िबाने तक़्वा हों और वोह लोग जो साह़िबाने एह़सान (भी) हों।